११९८ घ

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ११९८ - घ

Title शिवताण्डव स्तोत्रम्

Author दशकन्धरः

Extent १ Age

Subject स्तोत्रम् सम्पूर्णम्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नं० १११८-घ

**शिवताण्डवस्तोत्रम्** (स्तोत्रम्)

नं० १११८-घ

पत्रम् १ (एकम्) (सम्पूर्णम्)

कर्ता दशकन्धरः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरीविलोलवीचिव
ल्लरीविराजमानमूर्धनि धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचं
द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदं
बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे मदांधसिंधुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनोवि
नोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि २ धराधरेंद्रनंदिनीविलासबंधुरस्फुरद्दिगंतसं
ततिप्रमोदमानमानसे कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्दिगं
बरे मनोविनोदमेतु वस्तुनि ३ सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसून
धूलिधोरणीविधूसरांघ्रिपीठभूः भुजंगराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै
चिराय जायतां चकोरबंधुशेखरः ४ कपालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज
लद्धनंजयाहुतीकृतप्रचंडपंचसायके धराधरेंद्रनंदिनीकुचाग्रचित्रपत्रिका
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ५ ललाटचत्वरज्वलद्धनंजयस्फुलिं
गया निपीतपंचसायकं नमन्निलिंपनायकं सुधामयूखरेखया विराजमानशेखरे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

महाकपालिसंपदे शिरोजटालिमस्तु नः ९ प्रफुल्लनीलपंकजप्रचंडकालिम
मच्छटाविडंबकंठकंदलीरुचिप्रबद्धकंधरं भजे स्मरछिदं पुरछिदं भवछिदं म
खछिदं गजछिदंधकछिदं तमंतकछिदं भजे १० अखर्वसर्वमंगलाकलानिद
नमंजरीरसप्रवाहमाधुरीविजृंभणामधुव्रतं स्मरांतकं पुरांतकं भवांतकं
मखांतकं गजांतकांधकांतकं तमंतकांतकं भजे ११ जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजंगमश्व
सस्फुरद्धिगद्धिगद्विनिर्गमत्करालभालहव्यवाट् धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदंग
तुंगमंगलध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचंडतांडवः शिवः १२ दृषद्विचित्रतल्पयो
र्भुजंगमौक्तिकस्रजोः गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः तृणारविंद
चक्षुषोः प्रजामहीमहेंद्रयोः समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहं १३ कदानि
लिंपनिर्झरीनिकुंजकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमंजलिं वहन् वि
लोललोलनाललाटभाललग्नकः शिवेति मंत्रमुच्चरन् सदा सुखी भजाम्यहं १४
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शंभुपूजनपरं पठते प्रदोषे तस्य स्थिरां र
थगजेंद्रतुरंगयुक्तां प्रसन्नां लक्ष्मीं सदैव सुमु
खीं प्रददाति शंभुः १५ ॥ इति श्रीदशकं
ठविरचितं शिवतांडवस्तोत्रम् ॥ शुभम्
॥

शिव

नम १

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative